विद्यालय पत्रिका

2019-20

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक – 2 ओ.सी.एफ, शाहजहाँपुर

विद्यालय पत्रिका 2019-20

CHIEF PATRON

Shri. Devendra Kumar Dwivedi

Deputy Commissioner

KVS, RO. Lucknow

Shri.T.P Gaur

Assistant Commissioner

KVS, RO. Lucknow

PATRON

Mr. Yogendra Kumar Shakya

Principal

KV-2, OCF, Shahjahanpur

Editorial

English Department
Mr. Mairaj Ahmad(PGT English)
Ms. Alpana Sharma (PGT English)
Ms. Tanuja (TGT English)

हिंदी विभाग

श्री अनुपम भारद्वाज(स्नातकोत्तर शिक्षक)
श्री प्रशांत कुमार (प्र.स्नातक शिक्षक)
श्री पंकज कुमार (प्र.स्नातक शिक्षक)
श्री सुनील प्रसाद (प्र.स्नातक शिक्षक)

संस्कृत विभाग

श्रीमती रेनू बाला (प्र.स्नातक शिक्षक)
श्री इब्राहिम मलिक (प्र.स्नातक शिक्षक)

संदेश

शिक्षा जगत में केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-2 ओ०सी०एफ० शाहजहाँपुर शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय मूल्यों, जीवन मूल्यों एवं अपनी अभिरूचियों के अधिगम हेतु अनवरत प्रयासरत है।

विद्यालय पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जो राष्ट्र के भावी कर्णधार विद्यार्थियों की प्रतिभा का प्रतिबिम्ब है, इसके द्वारा विद्यालय को अपनी समस्त गतिविधियों को देखने एवं अभिभावकों तथा प्रबुद्ध वर्ग तक उन उपलब्धियों को पहुँचाने का अवसर प्राप्त होता है।

इन अद्‌भुत क्रियाकलापों को समग्र स्वरूप देने वाले समस्त बाल एवं किशोर रचनाकारों तथा शिक्षकों को मैं ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष, नामित अध्यक्ष एवं केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त तथा लखनऊ विभाग के उपायुक्त, सहायक आयुक्त तथा सभी वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। समय-समय पर अभिभावकों द्वारा दिए गए सुझावों के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित....!

योगेन्द्र कुमार शाक्य
प्राचार्य

उप-प्राचार्य की कलम से.......

विद्यार्थियों में अंतर्निहित सर्जनात्मक प्रतिभा को उचित मंच देने के लिए विद्यालय पत्रिका एक सशक्त माध्यम है। विद्यालय रूपी उपवन में विद्यार्थियों रूपी पौधों को पुष्पित और पल्लवित होने का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है। विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ युवा मन में स्वस्थ सामाजिक परम्पराओं, श्रेष्ठ संस्कारों, उच्च नैतिक मूल्यों और राष्ट्र प्रेम का बीजारोपण किया जाता है।

मेरी परम पिता परमेश्वर से हार्दिक प्रार्थना है कि हमारे विद्यार्थी जब शिक्षा पूर्ण कर विद्यालय से विदा हों तो सकारात्मक ऊर्जा, उत्तम चरित्र और नैतिक मूल्यों से लबरेज ऐसे विचारवान युवा बनकर निकलें जो समाज के हर क्षेत्र में अपना विशेष स्थान बना सकें।

मैं माननीय प्राचार्य जी का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिनके कुशल निर्देशन में विद्यालय निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है। मैं विद्यालय पत्रिका के संपादक मण्डल को भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनके अथक प्रयासों से इस पत्रिका को एक नए कलेवर में हम पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर सके।

धन्यवाद।

विजय प्रकाश

उप-प्राचार्य (प्रथम पाली)

सम्पादकीय

विद्यालय पत्रिका राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा बाल केंद्रित व्यवस्था के अंतर्गत विद्यार्थियों की कल्पनाशील उर्जा की सृजनात्मक क्षमता तथा आत्मबोध को मुखर बनाने हेतु लेखन रूपी मंच प्रदान करती है.

जिससे उनकी अर्जित भावनाओं, भाषाई दक्षता एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति तथा स्वाभाविक मेधा का सम्यक विकास किया जा सके.

सीखना सतत प्रक्रिया है और शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है सभी का सर्वांगीण विकास.

प्रस्तुत पत्रिका का यह अंक बाल सुलभ मन की आड़ी तिरछी उमड़ती-घुमड़ती क्रियाशीलता एवं सतरंगी इंद्रधनुष की विविधताओं में एकता का दर्पण है. संभव है बच्चों की तोतली भाषा में अंकुरित पुष्प माला पिरोने के क्रम में कुछ पंखुड़ियां बिखर गई हों किंतु सुधी पाठक उस बिखराव को नजरअंदाज करते हुए बाल प्रतिभा-प्रयास का उत्साहवर्धन करेंगे.

इस पुनीत कार्य की गतिविधियों से संबंधित सभी व्यक्तियों के प्रति, मैं संपादक मंडल की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं. मैं विद्यालय के यशस्वी प्राचार्य श्री योगेंद्र कुमार शाक्य, उप-प्राचार्य श्री विजय प्रकाश का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं, जिनका स्नेहिल एवं कुशल मार्गदर्शन ई-पत्रिका के प्रकाशन में हमारा संबल बना.

सभी महानुभाव अधिकारियों, अभिभावकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षक साथियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिनकी शुभकामना समन्वित संदेशों/आशीर्वचन, लेखों, विचारों और सुझावों से विद्यालय पत्रिका की प्राण प्रतिष्ठा पूर्ण हुई है.

भारत के भावी भविष्य/कर्णधार प्रिय विद्यार्थियों को हमारा यही संदेश है कि जब विश्व बौद्धिक प्रगति की ओर अग्रसर है ,वह भावनात्मक संवेदनाएं को स्थापित कर मानव जीवन को आदर्श बनाने का संकल्प लें चरित्र बल, परहित कल्याण भावना, साहस तथा संयम द्वारा इच्छाशक्ति के प्रवाह से स्व जीवन निर्माण करें.

सभी लक्षित/अलक्षित अभ्यर्थनाओं/त्रुटिओं का नैतिक उत्तरदायित्व स्वयं वहन करते हुए शब्द ,अर्थ,विचार, भाव चतुष्टयी को नमन तथा सभी के लिए मंगल कामना..

संयम, सेवा स्वाध्याय को निजी जीवन का अंग बनाएं
बिखरावों से दूर रहे हम, राष्ट्रप्रेम साधक बन जाएं
क्षमताओं को संचित कर के जग मंगल के लिए लगाएं
अपनी आत्मा ज्योति से पुलकित अपने सूर्य स्वयं बन जाएँ

शुभेच्छु
अनुपम भारद्वाज
स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी

हिन्दी अनुभाग

केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 (ओसीएफ़) शाहजहाँपुर
के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर सन्देश

केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 (आ.व.नि.) शाहजहाँपुर
के विद्यार्थियों का हिन्दी पखवाड़ा समारोह के अवसर पर सन्देश

कविता- सुखधाम

भारत माँ का सदन सुहाना,
स्नेह-प्रेम सम्मान यहाँ।
सुख-दुःख में हैं गूँजा करते,
निशि-दिन गौरव गान यहाँ।

नहीं भेद हैं जाति धर्म का,
मानवता का मूल यहाँ।
इसका आँगन सुन्दर उपवन,
भाँति-भाँति के फूल यहाँ।

राम, रहीम और ईसा से,
मिला श्रेष्ठतम ज्ञान यहाँ।
मन्दिर-मस्जिद और गिरिजा में,
सुलभ एक साध्या न यहाँ।

सदा मित्र बन हाथ बढ़ाते,
नहीं बैर का नाम यहाँ।
अपने हित से पहले करते,
हम पर हित के काम यहाँ।

भारत अपना स्वर्ग मनोहर,
कण-कण भरा लालिमामय यहाँ।
बहती है निर्मलसरिता,
सबका है सुखधाम यहाँ।।

अजय कुमार मीणा
(प्राथमिक शिक्षक)

कविता- मेरी प्यारी अध्यापिका

घर छोड़ कर शुरू-शुरू में,
स्कूल चला जब आता था,
माँ को याद कर-करके,
मैं बहुत आँसू बहाता था।

फिर प्यारी अध्यापिका ने,
प्यार से मुझ को समझाया,
मैं भी तो माँ जैसी ही हूँ,
कहकर मुझ को सहलाया।

अपनी प्यारी शिक्षिका को,
धन्यवाद चाहता हूँ कहना,
आप हमेशा नन्हें मुन्हे,
के संग बस ऐसे ही रहना।।

धनंजय प्रताप सिंह
कक्षा-2'अ'

आत्मनिर्भर भारत – राष्ट्र विकास में विद्यार्थियों की भूमिका

छायावाद युग की प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा कि कुछ पंक्तियाँ जिन्हें वे एक विद्यार्थी को समर्पित करते हुए कहती हैं अपने विश्वास को अपने में समेट ले और ,अपनी आस्था को ,यदि आप अपनी सारी शारीरिक शक्तियों को" राष्ट्र निर्माण के मार्ग में जो भी बाधाएं , वास्तव में प्रलय के बादल छट जायेंगे देखें कि आपके पास क्या शक्ति है तो "| होंगी वे दूर हो जाएँगी

एक राष्ट्र के विकास में उस देश कि युवा शक्ति अर्थात विद्यार्थियों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है आज | उसके | देश के हर छेत्र को विकसित करने में उसकी अहम् भूमिका है | का विद्यार्थी ही देश का भावी कर्णधार है अन्दर वो असीम शक्ति है जिसका प्रयोग कर वो अपने राष्ट्र का पुनरुत्थान कर सकता है एक आदर्श विद्यार्थी देश | | ये नींव जितनी ही मजबूत होगी ईमारत उतनी ही बुलंद होगी | की प्रगति की नींव है

वर्तमान समय में जबकि देश को आत्मनिर्भरता से परिपूर्ण बनाना है तो देश को बेरोजगारी के राक्षस से मुक्त करना पहला कार्य होना चाहिए इसके | लिए देश में फैली कुछ बुराइयों को दूर करना आवश्यक होगा जिनका कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बेरोजगारी से रिश्ता है और ये है भ्रष्टाचार | आदि , लिंगभेद , जातिवाद , छेत्रवाद ,

इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण हैं जिसमें ये देखने में आता है कि जिस देश का युवा विद्यार्थी जितना जागरूक होगा वह देश उतनी ही तरक्की करेगा नागासाकी और हिरोशिमा जैसे एटम | जापान इसका ज्वलन्त उदाहरण है | पूर्व में स्थित इस छोटे से | म के हमले को झेलने के बाद भी आज एक मजबूत औद्योगिक देश के रूप में खड़ा हैब देश के पास संसाधन कम है फिर भीMADE IN JAPAN दुनिया कि जुबां पर है क्योंकि वहाँ का युवा ? क्यों , , छेत्र , धर्म , जाति | से आत्मनिर्भर बना रहा हैउ , विद्यार्थी अपने देश के लिए नई नई तकनीकों का प्रयोग कर | भाषा आदि को लेकर दंगे या लड़ाई नहीं करता

ऐसे ही दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में युवा शक्ति भी नंबर एक पर ही है यदि ये चाहें तो हमारा देश | इससे | भारत में निर्मित सामान को निर्यात कर सकते हैं हर छेत्र में न केवल आत्मनिर्भर हो बल्कि हम दुसरे देशों में देश का आर्थिक स्टार सुधरेगा तो सामाजिक स्तर में भी सुधरेगा जिससे देश विकाशशील से विकसित देशों कि श्रेणी में आ जायेगा नेत्रित्व , कतासकार्तम , इस युवा शक्ति में कर्मठता | परिणामस्वरुप प्रतिव्यक्ति आय में सुधार होगा | युआ विद्यार्थी देश के |जागरूकता और समय की नजाकत को समझने की समझ होनी चाहिए , करने की शक्ति बेरोजगार व्यक्तियों को निजी उद्यमों की प्रेरणा देकर इनके अन्दर स्वावलंबन कि भावना जगा सकते हैं सरकार | आदि की जानकारी प्रदान कर देश को आत्मनिर्भर बनने ASKILL INDI के द्वारा चलायी जा रही योजनाओं जैसे | में योगदान दे सकते हैं

अक्सर देखने में आता है कि जो व्यक्ति आज देश कि राजनीती में भाग ले रहे हैं वे पूर्व में किसी न किसी विश्वविद्यालय स्तर पर चुनावों में भाग ले चुके हैं में अपने मत का न्यायोचित प्रयोग यही युवा विद्यार्थी भविष्य | अपनी असीम शक्ति का सकारात्मक तथा सृजनात् | कर राष्ट्र निर्माण में अपनी अहम् भूमिका अदा कर सकते हैंमक प्रयोग कर देश को आत्मनिर्भर बना सकते हैं इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह युवा विद्यार्थी ही अपने देश के | उन्हें आगे , उनका पालन करते हुए , कि हजारों वर्षो कि तपस्या और साधना का सार है जीवन मूल्यों को जो उन्नति के पथ पर अग्रसर , बढ़ाते हुए देश को खुशहाली करते हुए आत्मनिर्भर बना सकते हैं |

अभिनन्दन सिंह-' 11 ब'

विषय - ' बढ़े चलो '

फूल बिछे हों या कांटे हों ,
राह न अपनी छोड़ो तुम।
चाहे जो विपदाएं आये ,
मुख को जरा न मोड़ो तुम।

साथ रहें या रहें न साथी,
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम।
नही कृपा की भिक्षा मांगो ,
करन दीन बन जोड़ो तुम।
बस ईश्वर पर रखो भरोसा ,
पाठ प्रेम का पढ़े चलो।
जब तक जान बनी जो तन में ,
तब तक आगे बढ़े चलो।

तनिष्का सक्सेना
कक्षा - चतुर्थ- अ

माँ तुम हो

जब मेरा प्रारम्भ हुआ । तुम इस जीवन की प्रथमा थी।।
तब मैने रूदन की चाह भरी। तुम मन ही मन छलकी थी।।
मैं तब नीदों में खो जाती। जब हौले से तुम थपकाती।।
मेरी एक किलकारी पर। तुम उलझन में भी मुस्काती।।
मेरी भूख प्यास को तुम जाने कैसे जान गयी।
मेरे रोने का मतलब तुम सीधे से पहचान गयी।
शिक्षक तब भगवान हुए जब कक्षा एक में चली गयी।
और जो मेरे भगवान् रहे दुनिया ने उनको नाम दिया।
जैसे जैसे मैं बड़ी हुयी/जीवन के उस मरू सफर में।
तुम मुझे देख के जीती थी। मैं जीती थी सपनों को।
तुम मेरे कपड़े सीती थीं। मैं जब भी तुफानों में घिर आयी।।
तुम हर एक बार दीवार बनी........।

आर्या हिम्मत सिंह
कक्षा - 2–ब

' एक रोज़ कोविड आया '

जब चीन से एक रोज़ कोविड-19 आया
तब इसने दुनिया में बड़ा हाहाकार मचाया|
हम सब ने मिलकर स्वच्छता का ज्ञान बढ़ाया
तब जाकर इस वायरस से लड़ना हमें आया|
खाँसी, छींक और नज़दीकियों से दूरी बनाना
लॉकडाउन का ये अर्थ मम्मी-पापा ने बतलाया|
शिक्षकों ने घर बैठे शिक्षा का ऑनलाइन पाठ पढ़ाया
तब जाकर आगे बढ़ने का हौसला हमने पाया|

सारा
कक्षा - 2 स

'चाह यही फौजी बनूं'

चाह नही है बनूं डॉक्टर मरीजों द्वारा पीटा जाऊँ चाह नहीं है बनूं मास्टर ओर बच्चों को मार लगाऊँ चाह नही है बनूं पुलिसवाला रिशवत लेते पकड़ा जाऊँचाह नही है बनूं विधायक और लोगों को मूर्ख बनाऊँ चाह यही है फौजी बनकर भारत माँ का मान बढ़ाऊँ।

अर्पित कुमार
कक्षा -2 स

एक पुष्प वीरांगना अवंतीबाई जी के नाम

सत्तावन के महासमर में जागी इक तरुणाई थी।
अंग्रेजों से डटकर जिसने रण में लड़ी लड़ाई थी।
दुर्गावति] झाँसी की रानी-लक्ष्मीबाई के जैसे-
मातृभूमि के लिये न्योछावर हुई अवंतीबाई।

देवांश कुमार सिंह
कक्षा-2 ब

यह हमारा विद्यालय है, शिक्षा का उत्तम आलय है

पढ़ते यहाँ हम सब बच्चे
नियम-रीतिमें है सब सच्चे।
इंग्लिश यहां सिखाई जाती है
हिंदी हां पढ़ाई जाती है
गणित यहां समझाई जाती है
कला यहां सिखलाई जाती है
शिक्षक सभी गुड़ीवीर दान
देते विधा कानितदान। भाईचारे की शिक्षा देते
देशभक्ति का पाठ पढ़ाते।
यह शिक्षा का उत्तम आलय है

ऋषिका मिश्रा
कक्षा–4-स

"मेरे प्यारे पापा"

प्यारे-प्यारे मेरे पापा,
सबसे अच्छे मेरे पापा,
रोज हमको सुबह उठाते,
सैर करने बाग ले जाते,
खेल खिलौने खूब लाते।
घोड़ा बनकर हमे घुमाते,
मेरी सारी इच्छा पूरी करते,
प्यारे-प्यारे मेरे पापा,
सबसे अच्छे मेरे पापा।।

शोध कटियार
कक्षा-2'अ'

"कोरोना महामारी"

करोना आया, करोना आया
बड़ा डरावना, करोना आया
बच्चों आओ – बच्चों आओ
करोना से न तुम घबराओ
करोना को आज तुम जानो
करोना के लक्षण पहचानो
करोना को जब जान जाओगे
तो वायरस को मार भगाओगे

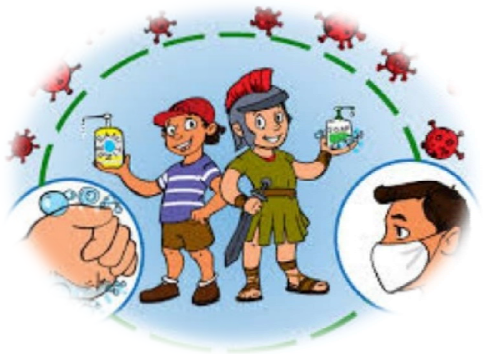

करोना के लक्षण चार
खांसी,दर्द,थकान,बुखार
अपने हाथ अच्छे से धोना
बीमार व्यक्ति से दूर ही रहना
खांसी हो तो मास्क पहनना
करोना से तुम बिल्कुल न डरना
कहो नमस्ते हाथ न मिलाओ
बाहर से आके खूब नहाओ
बुखार हो तो डाक्टर बुलाओ
करोना को तुम दूर भगाओ
जानकारी और सावधानी, के साथ हम रहे तैयार
बच न पायेगा करोना, अब होगी उसकी हार

रक्षिता शुक्ला
कक्षा – 2 'अ'

हिंदी मेरी मातृभाषा है

हिंदी मेरी भाषा है,
हिंदी की अभिलाषा है,
दीप जलाओ हिंदी के
हिंदी मेरी मातृभाषा है।

तन से हिंदी,
धन से हिंदी,
मन से हिंदी भाषा है।
दीप जलाओ हिंदी के
हिंदी मातृभाषा है।

हिंदी जग की जान है,
हम सबका अभिमान है,
फूल खिलाओ हिंदी के
हिंदी मातृभाषा है।

सहज त्रिवेदी
ग्यारहवीं 'ब'

कोरोना

कोरोना- कोरोना अब जाओ तुम।
जबसे तुम आए हो, हमें घर में बैठाए हो।।
हमें स्कूल नहीं जाने देते, चलो भाग जाओ।
हमें घर से बाहर निकलना है।।
कोरोना-कोरोना अब जाओ तुम।
बना रहे हैं वैक्सीन, अब होगा अंत तुम्हारा।।
कोरोना- कोरोना अब जाओ तुम।

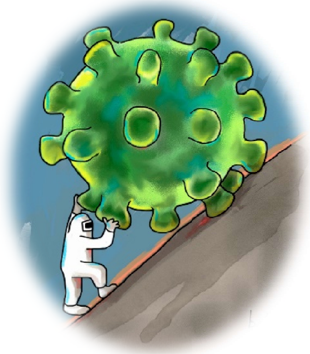

जीत सिंह
कक्षा :- 2B

कहानी-एक दिन मेंढकों का झुण्ड जंगल से जा रहा था। तभी उनमें से दो मेंढक गहरे गड्ढे में गिर गये तभी बाकी मेंढकों ने पीछे मुड़ कर देखा कि उनके दो साथी गड्ढे में गिर गये है। उन्होने अपने साथियों से कहा कि तुम अपने आप को मरा हुआ समझो। वो दोंनो गड्ढे से बहार निकलने की कोशिश करने लगे और ऊपर के लिए कूदने लगे बहार खडे उनके साथी यह कह रहे थे कि तुम कभी बाहर नहीं निकल पाओगे। उन दोनों मे से एक गिर कर मर गया। दूसरा वाला कूदता रहा और एक लम्बी छलांग लगाई और बाहर आ गया। बाहर उसके साथियों ने पूछा कि हम तो कह रहे थे की तुम बाहर कभी भी नही आ पाओगे फिर कैसे आ गए। तभी मेंढक ने कहा कि मैं थोड़ा ऊँचा सुनता हूँ, मुझे लगा कि आप लोग मेरा हौंसला बढ़ा रहे हो। इसी कारण मैं बाहर आ गया।

शिवांश कुमार
कक्षा - 3 वी

विषय—मेरा प्यारा देश

देश मेरा, प्यारा देश।
जिसमें धर्म और भाषाऐं अनेक।
लेकिन हम सब फिर भी एक।
देश मेरा प्यारा देश।
हम मिलकर प्रण लेते एक।
इरादे होगें हमारे नेक।
देश मेरा प्यारा देश।

कुशाग्र, 2-अ

चुन्नु - मुन्नु

चुन्नु मुन्नु थे दो भाई
रसगुल्ले पर हुई लड़ाई
चुन्नु बोला मैं खाऊँगा
मुन्नु बोला मैं खाऊँगा
झगड़ा सुनकर मम्मी आई
दोनों को एक बात लगााई
आधा तू ले चुन्नु बेटा
आधा तू ले मुन्नु बेटा
करो न झगड़ा और लड़ाई
तुम दोनों हो भाई-भाई

आरुशी राठौर 5 , स

अपनी प्यारी हिंदी

हिंदी का अस्तित्व बचाना है यह कर्तव्य हमारा है
इसका अस्तित्व जहां पर है देश वो सबसे प्यारा है

क्यों भूलते हिन्दी हो हिंदी को हिन्दी से तुम बड़े हुए
हिंदी पढ़ लिखके तुम अपने पांव पर खड़े हुए

इस भाषा में जन्मे हम ओर जीवन इसमें बीता है
जिसने समझा इसका मूल्य वो हिन्दी को जीता है

न हिन्दी केवल है विषय न हिन्दी केवल भाषा है
ये राष्ट्र के नव निर्माण की जगी हुई एक आशा है

जो इंग्लिश पे अहम करें वो इसकी करता निंदा है
हिन्दी से है राष्ट्र हमारा इससे संस्कार जिंदा है

काव्य- गंध का रूप निहारे हिन्दी एक आधार है
हिंदी में श्रृंगार झलकता ओर झलके अंगार है

क ई हुए हैं इसमें ज्ञानी कोई इससे बलवान हुआ
इस भाषा की देन हैं जिसमें साकेत और गोदान है

इसमें नौं रस छंद अलंकार व्याकरण का ज्ञान है
हिंदी देती इतना कुछ ये हिन्दी बड़ी महान है

मान सको तो मान लो ये राष्ट्र की रक्षक हिन्दी है
सब कुछ ज्ञान कराने वाली अपनी शिक्षक हिन्दी है

लक्ष्मी 12 अ,

हताश हूँ

मैं चल रहा हूँ राह पर, डगर-डगर, भटक-भटक,
ना मोह है, ना चाह है, कदम बढ़े अटक-अटक,
शरीर है जो साथ है, बजूद था जो मिट गया,
उन्हीं को है दगा दिया, जिनसे ये बजूद था,
जो पाया वो सोचा नही, जो सोचा वो मिला नहीं,
इन चाहतों के भंवर में मैं, छुपी हुई सी प्यास हूँ,
हताश हूँ।

सुनी नहीं, कही नहीं, किया वही जो लगा सही,
खाली था मकां मेरा, दिल मे भरी अकड रही,
अकड अकड के रह गई, मकां मेरा ढ़ह गया,
मैं खाली हाथ आया था, मैं खाली हाथ रह गया,
मैं, मैं मे ही रह गया, मुझे मैं मिला नहीं,
खुद की खोज में निकल, छुपी हुई सी आस हूँ,
हताश हूँ।

खुशी भी थी, गम भी था, नहीं था जो विश्वास था,
इमारतें बहुत बनी, बस नीब का ना साथ था,
कदम बढ़े बढ़ते गये, अनंत की चाह में,
रुका ना मैं क्षणिक भर, दिनकर तपन की आह में,
पैर में छाले पडे, अनंत भी मिला नहीं,
जटिल जंगल जीवन में, छुपी हुई सी घास हूँ,
हताश हूँ।

नाम - दीपांशु मिश्रा
कक्षा - बारहवीं 'अ'

पहेली

1. वह कौन है जो दिन में होता है रात में नहीं
उत्तर. सूरज
2. चारपाई को तीन अक्षरों में कैसे लिखेगें
उत्तर 4 .पाई
3. बूझो भईया एक पहेली जब भी करो तो निकले नई नवेली
उत्तर .पेंसिल
4. गिन नहीं सकता कोई है हज़ारो लाखो एक साथ, दिमाग को ढके रहते, गर्मी सर्दी बरसात.
उत्तर .बाल
5. ऐसी कौन सी चीज़ है जिसके पास पंख नहीं होते फिर भी उड़ती है.
उत्तर .पतंग

सादियानूर
कक्षा– 5 'A'

मेरी चिड़िया

मेरी चिड़िया कितनी सुंदर कितनी प्यारी,
पंख पसार दूर-दूर तक हो आती,
है नील गगन में जब पंख फैलाती,
रेशम जैसे पंख उसके मेरे मन को भाते।

फुदक-फुदक कर इस डाली से उस डाली हो आती है,
चीं-चीं कर वो गाना गाती,
गाना गाती और सभी का मन बहलाती,
मेरी चिड़िया कितनी सुंदर कितनी प्यारी।।

मनतशा
कक्षा :- 4B

कोरोना

कोरोना आया है।
सभी को इससे बचना है।
कोरोना से बचने के लिये
हाथो में सेनेटाईजर और
गिलोय का काढा पीना है।

कोरोना से बचने के लिये
बहुत जरूरी काम से यदि
बाजार को जाना है।
तो दो फीट की दूरी
एक दूसरे से जरूर बनाना है।

इतनी बात यदि रखेगें याद
तो कोरोना भागेगा
हम जीतेगें आज।

नैतिका देबी
कक्षा-2अ

मन के हारे हार है

कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ, जो आगे चलकर गौतम बुद्धहुए, गृह त्याग कर निकले, तो बोध की खोज में काफी भटके।आखिर उनकी हिम्मत टूटने लगी। उनके मन में यहविचार बारबार उठने लगा कि क्यों न वापस राजमहल चला जाए। अंत मेंएक दिन वह कपिलवस्तु की ओर लौट ही पड़े। चलते-चलते राहमें उन्हें प्यास लगी। सामने ही एक झील थी। वह उसके किनारेगए, तभी उनकी दृष्टि एक गिलहरी परपड़ी। उस गिलहरी की चेष्टाओं ने सिद्धार्थका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया।

वह गिलहरी बार-बार पानी के पास जाती, अपनी पूंछ उसमें डुबोती और उसे निकालकर रेत पर झटक देती। सिद्धार्थ से रहा नहीं गया। वह पूछ ही बैठे, 'नन्ही गिलहरी, तुम यह क्या कर रही हो?' उसने सत्संग उत्तर दिया, 'इस झील को सुखा रही हूं।' सिद्धार्थ बोले, 'यह काम तो तुमसे कभी नहीं हो पाएगा, भले ही तुम हजार बरस जियो और करोड़ों-अरबों बारअपनी पूंछ पानी में डुबोकर झटको। झील को सुखाना तुम्हारे बसकी बात नहीं।' गिलहरी बोली, 'तुम ऐसा मानते हो, पर मैं नहींमानती। मैं तो यह जानती हूं कि मन में जिस कार्य को करने का निश्चय किया, उस पर अटल रहने से वह हो ही जाता है। मैं तोअपना काम करती रहूंगी। यह बोलकर वह अपनी पूंछ को डुबोनेके लिए झील की ओर चल पड़ी। गिलहरी की बात सिद्धार्थ केहृदय में बैठ गई। वह वापस लौटे और फिर तप में रत हो गए।

हाथी की रस्सी और नाकामियों का बोझ

एक व्यक्ति अपनी ही धुन में कहीं चला जा रहा था। खोया-खोया साहालात से मजबूर। दिमाग में हजारों सवाल थे, तभी उसकी नजर एकहाथी पर पड़ी, जो एक पतली रस्सी से बंधा हुआ था। उसकी समझ मेंनहीं आ रहा था कि इतना बड़ा हाथी मोटी चेन को भी तोड़ सकता है,तो रस्सी से बंधे होने पर उसे तोड़ना इसके लिए कितना मुश्किलहोगा। फिर भी वह शांत खड़ा है। उत्सुकतावश उस व्यक्ति ने महावतसे पूछा, ‘यह हाथी अपनी जगह से इधर-उधर क्यों नहीं भागता यारस्सी क्यों नहीं तोड़ता है? महावत ने जवाब दिया, ‘जब यह हाथीछोटा था, तब भी हम इसी रस्सी से इसे बांधते थे। उस समय यह बार-बार इस रस्सी को तोड़ने की कोशिश करता था,मगर रस्सी को कभी तोड़ ही नहीं सका।
कारण, तब इसमें इतनी शक्ति नहीं थी।

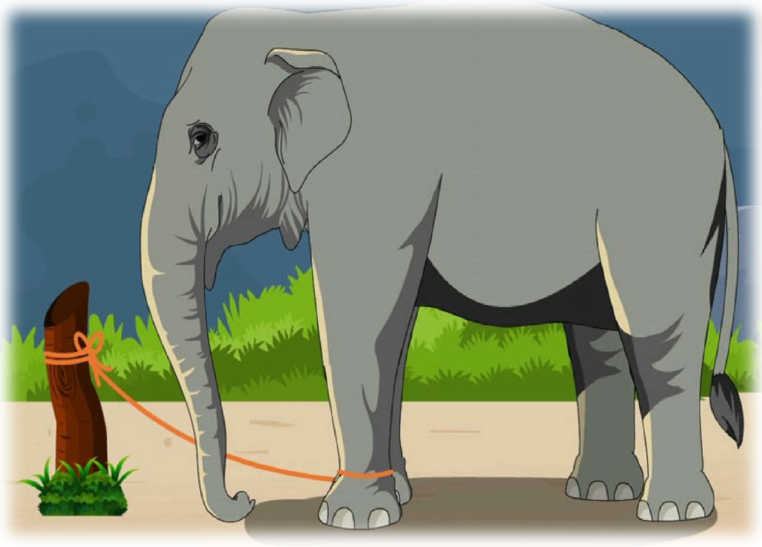

बार-बार रस्सी तोड़ने में नाकाम होने केकारण हाथी को यह विश्वास हो गया कि रस्सी को तोड़ना असंभवहै। यही सोचकर अब वह रस्सी को तोड़ने की कोशिश नहीं करताहै। उस व्यक्ति के दिमाग में जो हजारों सवाल चल रहे थे, उनकाजवाब उसे मिल चुका था। पुरानी नाकामियों ने उसके भी मन मेंअसफल होने का डर बिठा दिया था। मगर, हाथी की कहानी नेउसके दिमाग के जाले साफ कर दिए थे। उस हाथी की तरह हम मेंसे भी कई लोग ऐसे हैं, जो अपने जिंदगी में कई नाकामियों के बादहार मानकर बैठ जाते हैं। कोशिश करना छोड़ देते हैं। मगर,सफलता उन्हें ही मिलती है, जो बार-बार प्रयास करते रहते हैं।
दुनिया में कुछ भी अच्छा और बुरा नहीं होता, बल्कि हमारी सोच उसेअच्छा या बुरा बनाती है।

दिन वो भी क्या थे.......

नाम - सानिध्य शुक्ला
कक्षा - **3rd E**

दिन वो भी क्या थे जब हम अपने देश मे रहते थे
अपनी मिट्टी की खुशबु के परीवेश मे रहते है

दादी की पहली रोटी जो गाये के नाम की होती
और अंतिम रोटी उनकी खाता था गली का मोती
नन्दू भी ठीक समय पर रोज़आना आ जाता था
अपने हिस्से का खाना वो भी तो पा जाता था
हर घर के हर आंगन मे बकरी पाली जाती थी
चूटीयो के बिल के बाहर शक्कर डाली जाती थी
हम बच्चे ये सब करने के उपदेश मे रहते थे
दिन वो भी क्या थे ....

वो घर का कच्चा आंगन और उसपे बरस्ता सावन
हम भूल गये हैं जब से मिल गये आधुनिक साधन
एक मामुली सा बिछोना और छत पर जाकर सोना
किसी परी की कोई कहानी किसी जिन्न का जादू टोना
नानी की कहानी वाले किरदारो मे खो जाना
फिर जाने कब चुपके से सुनते सुनते सो जाना
आगे अब जाने क्या होगा पशोपेश मे रहते हैं
दिन वो भी क्या थे ....

सर धोने को मुलतानी चुस्की का बरफ़ गुरधानी
बुधिया का मीठा काता आँखो मे वो नादानी
रस्सी और बालटी लेकर वो दोड़ के कूये पे जाना
बिन तेल के बिन साबुन के मिट्टी मल मल के नहाना
जब चांदनी रातो मे भी असानी से पड़ते थे
हो पेड़ कोई केसा भी सबसे पहले चढ़ते थे
वो क्या बचपन था जब हर दम आवेश मे रहते थे
दिन वो भी क्या थे ....

वो कोआ कांव कांव करके तो चला जाता था
मेहमान कोई आयेगा ये बात बता जाता था
गांव के सभी दरवाज़े रातो को खुले रहते थे
सायकिल थी पास हमारे पर सबसे जुड़े रहते थे
ये सच है हम लोगो के उन दिनो मे घर कच्चे थे
घर तो कच्चे थे लेकिन रिशते सारे सच्चे थे
संत और साधु संसद मे नही शशिकेश मे रहते है
दिन वो भी क्या थे ।

नाम - श्रद्धा मौर्य **कक्षा - नवीं - ई**

बचपन

सबसे सुनहरा पल है बचपन
बीते कल का सुकून है बचपन।
बैर, द्वेष से कोसो दूर
कोई चिंता की न थी होड़
केवल खेल-खिलौने थे भाते,
दोस्तो संग खूब समय थे बिताते।
वो बचपन के खेल खूब याद आते।

वो छुपन-छुपाई, वो नदी-पहाड़
कभी गिल्ली-डंडा तो कभी पिट्ठू
या याद आती कभी पतंग की बाज़ी।
कट जाती थी जब पतंग दौड़
आज भी मन को खूब ललचाती।

वो राजा, मंत्री, चोर, सिपाही, वो कैरम की गोटी,
वो भँवरे का घूमना या घोड़ा-बादाम छाई कर भागना।

हाय ये बचपन के खेल मे
मैं अब भी हूँ डूब जाती।
डूबने से याद आया फिर पानी
कागज की कश्ती और नानी की कहानी।
काश समय फिर लौट आ जाए
काश हम फिर बच्चे बन जाए।

बेटी

बेटी है घर-आंगन की शोभा, बेटी से ही घर है सजता ।

सोचों अगर बेटी न होती, कैसे जीवन सबका होता ?

घर का दीपक कैसे जलता , कैसे जीवन चक्र ये चलता ?

कैसे रक्षा बंधन होता , कैसे मिलती माँ की ममता ?

बेटा-बेटी सोच में अंतर , इसको अभी बदलना होगा ।

मन के सारे भेद मिटाकर , सबको मिलकर चलना होगा ।

'प्राची 'ये सब से कहती है , आओ कुछ ऐसा काम करे ।

बेटी को भी बेटे जैसे, अवसर हम प्रदान करें ।

प्राची

कक्षा - 7 D

English Section

COVID-19

COVID-19 is the name given by the WorldHealth Organization (WHO) on February 11, 2020 for the disease caused by thenovel coronavirus. It started in Wuhan, China in late 2019 and has since spreadworldwide. COVID-19 is an acronym that stands for coronavirus disease of 2019.

Coronaviruses are common human and animal viruses. They were first discoveredin domestic poultry in the 1930s. In animals, coronaviruses cause a range ofrespiratory, gastrointestinal, liver, and neurologic diseases.

SADIYA NOOR
CLASS – 5TH 'A'

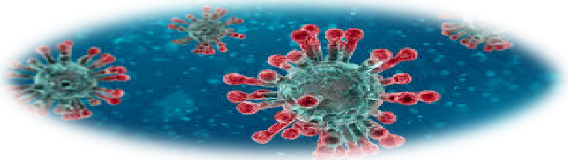

SAVE THE EARTH

Save the earth , save the earth

Keep it clean , keep it clean.

Reduce , Reuse and Recycle

That's our theme , that's our theme

Save the earth , save the earth

Its our home , its our home

Protect plants and animals , protect plants and animals

We are not alone , we are not alone

Save the earth , save the earth

Keep it green , keep it green

Don't pollute the water , don't pollute the water

Keep it clean , keep it clean

Atifa Khan

Class - 4 A

NATURE IS EVERYWHERE

Nature is everywhere

Nature is Everywhere you go

Everything that lives and grows is nature

Animals ,big or small

Nature is plants that grows so tall

Nature is beautiful in everyway.

Wonderful,exciting and

needs our care.

So listen ,learn and do your valuable part to keep

our nature beautiful forever.

Devangi Bajpai

III B

"FIGHT WITH CORONA"

If you want to win with Corona,

Always sanitize your hands.

If you want to win with Corona,

Always wear your mask.

If you want to win with Corona,

Always follow social distancing.

If you want to win with Corona,

Always follow the rules.

MOHD ISMAIL

Class :-. 2nd B

BALANCE SHEET OF YOUR LIFE

What comes to you is 'credit'.

What goes from you is 'Debit'.

Your birth is your 'opening stock'.

Your ideas are your 'Assets'.

Your weaknesses are your 'liabilities'.

The happiness is 'project'.

The sorrow is your 'Loss'.

Your soul is your 'Good will'.

Your heart is your 'fixed assists'.

Your duties are your 'capital'.

Your knowledge is your 'Interest'.

Your mind is your 'Bank balance'.

Your thinking is your 'current account'.

Your behaviour is your 'entry'.

Bad things you should always depreciate.

Aakul Kumar

Class – 11 D

SAVE WATER

Save water save water save save save

Stop misusing stop misbehave

Respect the water, now matter is grave

Think of the future, the percent God gave

Save water ! Save water !Save ! Save! Save

Ashish, 5 C

TRAFFIC LIGHTS

Red Light red Light,

What do you say?

I say stop and stop right away.

yellow light, yellow light,

What do you mean?

I mean wait, till The Light is green,

Green Light green Light,

What do you say?

I say go and go right away.

Dhruv Arora

Class- 3 'B'

CORONAVIRUS : CONDITIONS OF COUNTRIES WITH RESPECT TO THE ECONOMIC CRISIS

The first case of Corona virus was reported in Wuhan, China on 31 December, 2019. Corona virus (CoV) is a large family of viruses that causes illness. It ranges from the common cold to the more sever diseases like Middle East Respiratory Syndrome (MERS-CoV) and Severe Acute Respiratory Syndrome (SARS-CoV). The novel corona virus (COVID-19) is a new strain of virus that has not been identified in human beings. The name 'corona virus' is derived from Latin corona, meaning 'crown' or 'wreath'. WHO is working closely with global experts, governments, and other health organisations to provide advice to the countries about precautionary and preventive measures.

The corona virus pandemic is slowing global commerce to a crawl, but many of the world's largest economies are taking extraordinary actions to propel them through the crisis. In a matter of weeks, the highly contagious disease has pushed the world to the brink of a recession more severe than the 2008 financial crisis. The depth and duration of the fall will depend on many factors, including the behaviour of the virus itself, public health responses, and economic interventions.

Global economy is sailing into a gargantuan storm. "We anticipate the worst economic fallout since the Great Depression", said Kristalina Georgieva, managing director of International Monetary Fund (IMF). The Organization for Economic Co-operation and Development produced the strongest warning on record that most major economies had entered a 'sharp slowdown.' The World Trade Organization forecasted that nearly all countries of the world would suffer double digits decline in trade this year, with North American and Asian exporters hit hardest.

Just how quickly governments should unshackle their economies is a matter of debate. Some governments in Asia and Europe have begun to slowly reopen their economies. Similarly, more than a dozen U.S. states are unbinding demarcations, and President Trump did not refurbish federal social-distancing guidelines which expired on April 30. But recent dawn have already mustered some countries to reimpose restraints.

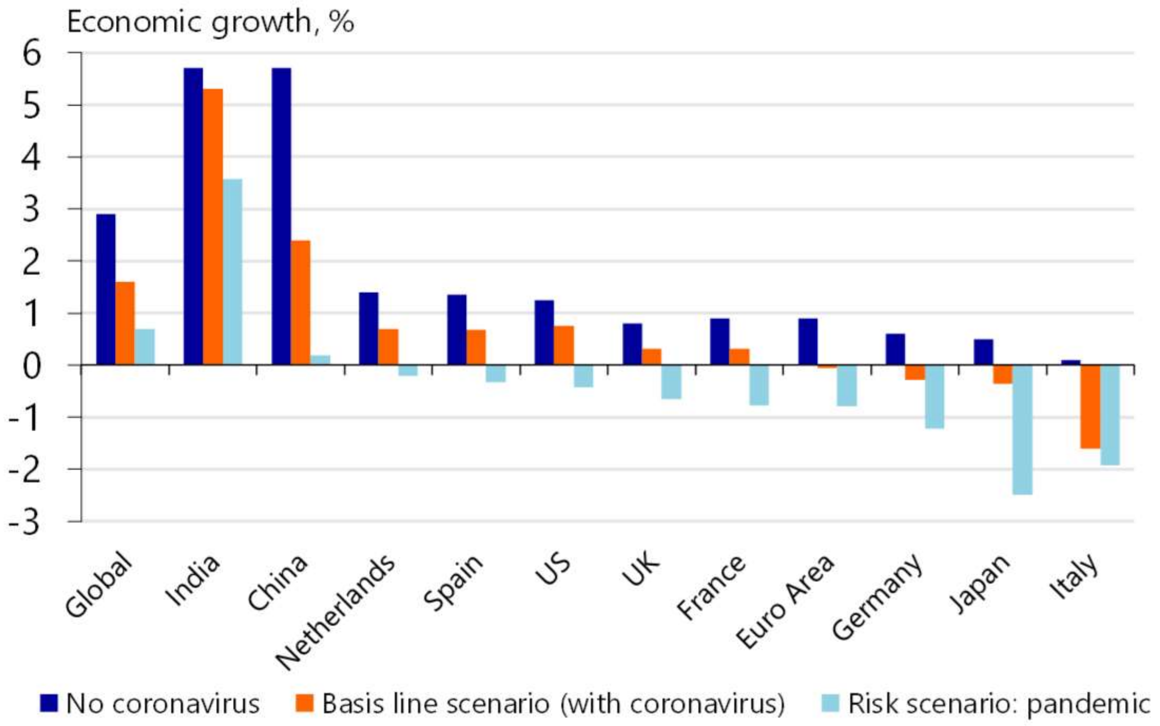

China

The world's second-largest economy was rousing back to life in April after suffering a shriveling blow from the corona virus, which originated in the city of Wuhan in December 2019. Government-imposed lockdown on dozens of cities which led to extreme decline in factory output, retail sales, construction, and other economic activity. Overall, gross domestic product (GDP) dipped almost 7% in the first quarter, China's first economic contraction in more than forty years.

So far, China's central bank has taken relatively modest actions, reducing reserve requirements for banks, which will allow them to loan an additional $80 billion to

struggling businesses, and indicating that it will cut interest rates in the months ahead. “The normal monetary policy should be kept as long as possible,” wrote central bank chief Yi Gang . “The impact of the pandemic is temporary. China’s economy has strong resilience and great potential, while the fundamentals for high-quality development won’t change.”

United States

Confirmed corona virus cases in the US increased significantly in March as testing was made more rapid and overtook China on 26March making the US the world’s most affected country by the number of cases. In a sign of the stunning toll the virus was taking on the U.S. economy, more than thirty million Americans (about one in six U.S. workers) have filed for unemployment since mid-March. Before this crisis, the highest number of filings in a single week was 695,000, in 1982. Most analysts expect the damage to be far worse in the second quarter, with some suggesting that the unemployment rate could reach as high as 40%, higher than its peak of 25 percent during the Great Depression.

Community spread and delayed testing has been a major concern to Americans as enough test kits are not available across states, while shortage of ventilators continues to result in increased deaths. The first corona virus case in US was confirmed on 21 January, but the cases surged from the second half of February and further in March as the nationwide testing were increased significantly.

India

The impact of corona virus has caused, seems to be at a critical juncture with the central government announcing lockdown. India is one of the world’s worst hit countries in the coronavirus pandemic, with reported cases spiking in recent weeks as the country emerged from a strict nationwide lockdown.

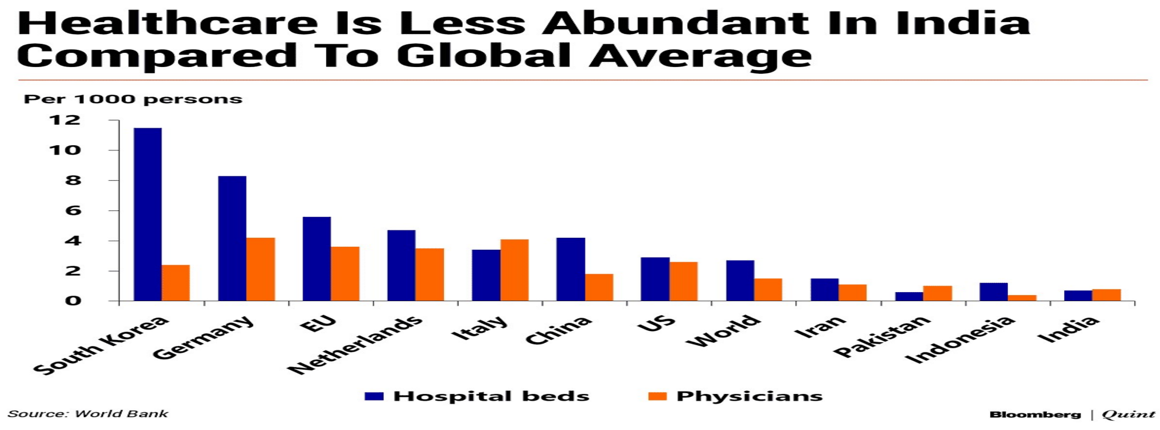

Cumulatively, India has reported more than 400,000 cases of infections since January. Though, relative to its population size, the percentage of infected individuals is still low.

India also says the number of people who have recovered is higher than those currently affected by the virus.

The country's lockdown began in late March and was subsequently extended several times. Stringent restrictions halted most economic activities and caused millions of people, many of them daily wage earners, to lose their jobs and revenue streams.

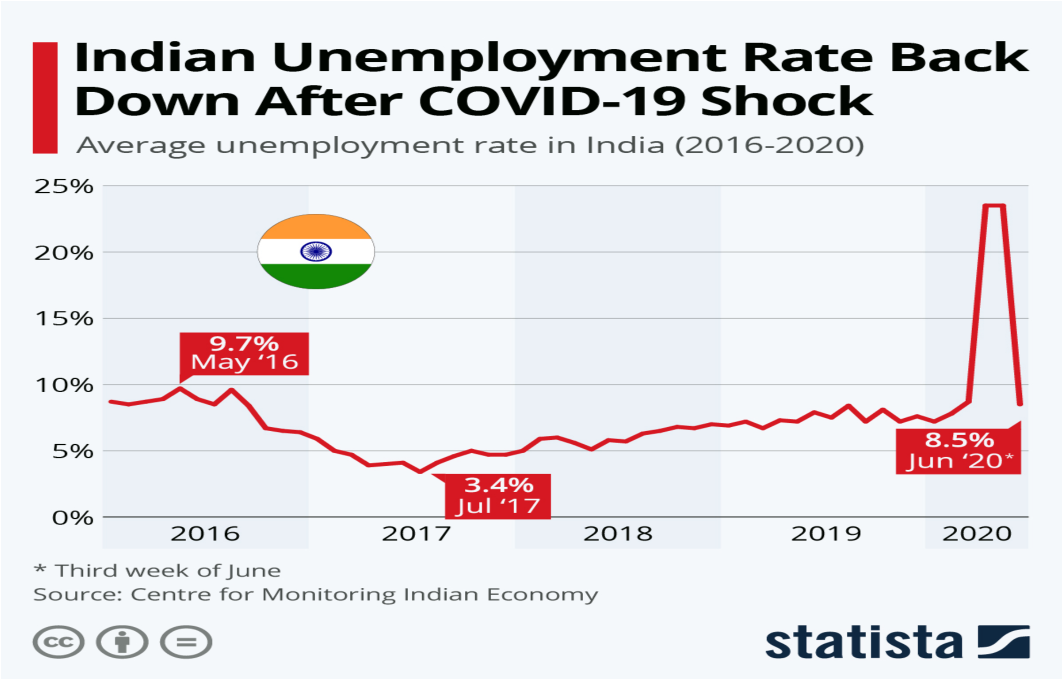

India's industrial production dropped sharply in April when the country went into lockdown and most factories were not in operation. The index contracted by 55.5% compared with the same period a year earlier. That includes sectors such as mining, manufacturing and electricity. Manufacturing of consumer durables saw the sharpest decline for the month.

One of India's most lucrative assets is its large consumer base. But people appeared to be less optimistic about their current situation and future expectations.

Data from the Reserve Bank of India showed consumer confidence collapsed last month. The current situation index and the future expectations index were both below 100, indicating that consumers were pessimistic. A reading above 100 represents optimism.

ABHINANDAN SINGH

CLASS: - XI B

PROCASTINATION

We often heard this word specially at social media platforms .We know that humans have been procastinating for centuries . ‘Akrasia’ is the word given by ancient greek philosophers like Socrates and Aristotle to describe procastination . It is the state of acting against your better judgement,In easy language we can call this as lack of self control. This is a serious problem which is majorly found in children /students .

WHAT IS PROCASTINATION?

It is the act of delaying or postponing a task or set of tasks . It is the force that prevents you from doing your tasks at that time when we should do our work .

WHY DO WE PROCASTINATE ?

Procastination is often confused with laziness . We procastinate because of our self control and motivation which might be shakened by many fators such as fear of failure , anxiety and other demotivating factors . People often procastinate because they averse / dislike the tasks they need to do. Perfectionism in many ways such as by making someone so afraid of making a mistake that they end up not doing anything can also leads to procastinate . Mood is also a major factor of this , everyone prefer doing their work when they in a good mood but it leads them to push off their work more . People also procastinate is because they believe that taking actions is more dangerous than not taking any action.

EFFECTS OF PROCASTINATION

Because of this we will be stressed out and it leads us to panic at wrong time. It will also demotivates us and make us thinking that we can’t do this or if we do it this will happen that will happen etc etc . This will also develop negative thoughts in our minds . It has been seen that students likely stressed too much because of this which leads to physical illness as well as mental illness , at worst they are likely to get depressed also. People experience frustation , guilt of not doing things at right time , low self esteem , anxiety.

HOW TO STOP PROCASTINATING ?

The very first step of solving any problem is to identify the problem , when we don't know that we are procastinating then how we should stop this .

We need to be organised in order to achieve our goal . We should know what we are doing , where are the essential things etc.

For a big task or project we should break it into smaller parts . The goal we set should be simple and achievable .

We should create a schedule .

We should set a limited time.

We should get rid of every distractions.

We should also take a small break in between in order to refresh ourselves .

At last we should have a healthy diet in order to gain a good physical and mental health .

Humaira Bee

Class XI B

ENVIRONMENT

The environment with its treasures
All so countless to measure.
Fish and whales in the deep blue waters
Life in the sea,so alive.

Grasslands and forests with terrestrial
life cold, freezing mountain peaks And
hot,tiring deserts Life among the trees
and sands,so alive Sky so blue with air

so clean Only sun,moon and stars to see
Eagles and viltures take their turn Life in
the sky,so alive

NAME-ARYAN SETH

CLAAS-5B

TOPIC-ENVIRONMENT

PARENTS

Parents are sea of love ,
Without them life is trouble ,
All friends and relatives may be rough ,
But parents are never such .
Their love is true , as sky blue !
They walk on thorns
To give us warmth .
We are buds,
They make us flower .
With their love and affection towards us,
Happy is the heart which
gets love from them
Sad is the heart
Which does not love them.

Name - Arya Verma
Class - VI 'C'

MY DAD: AN UNSUNG HERO

Dad is a person who is loving and kind
And often he knows what you have on your mind.
He's someone who listens, suggests, and defends.
A dad can be one of your very best friends!
He's proud of your triumphs, but when things go wrong,
A dad can be patient and helpful and strong.
In all that you do, a dad's love plays a part.
There's always a place for him deep in your heart.
And each year that passes, you're even more glad,
More grateful and proud just to call him your dad!
Thank you, Dad...for listening and caring,
for giving and sharing,
but, especially, for just being you!

AYUSH KUMAR SINGH
Class-8 A

AMAZING FACTS

1. India's Hindu calendar was the first calendar of all can time.
2. Pandas spend 14 hours in eating.
3. Rhythm is the biggest word without a vowels.
4. Russia has more surface area than Pluto.
5. Armadillo an animal have shells so hard they deflect a bullet.
6. The letter 'E' is the most common letter in the English language.
7. Natural bananas contain seeds inside of them.
8. Most expensive human made object is ISS (International Space Station).
9. Ant's can't die from falling.
10. Black hole originally have only one photograph.
11. Giraffes can't sleep by standing.
12. Avocados never ripen on trees.
13. Jellyfish are 95% water.
14. The most visited country by foreigners is France.
15. The Human civilization is on earth from 2,00,000 years.

Name - Aman verma

Class -8 A

संस्कृत अनुभाग

विद्या

ज्ञानार्थकाद् 'विद्'धातो: 'क्यप'् कृत्वा स्त्रीप्रत्यय:' टाप'् इति संयुज्य विद्या शब्दो नेष्पद्यते। मानवजीवने विद्याया: महत्त्वमतीव वर्तते। विद्ययैव जन: संसारेऽस्मिन् सुखान् सर्वान् लभते, न केवलं मृत्युलोके अपितु परलोकेऽपि स: विद्यया खलु सुखसम्पन्नो भवति। अनेनैव कारणेन शास्त्रेषु अस्माकं कथ्यते –

'विद्ययाऽमृतमश्नुते' ' विद्यया विन्दतेऽमृतम्'

विद्याया: अभावे मनुष्य: पशुतुल्य:। विद्या मानवस्य प्रच्छन्नं धनमस्ति। विद्ययैव जना: संसारेऽस्मिन् यश–सुख–भागिन: भवन्ति। यदि मनुष्य: विदेशं गच्छेत्, तर्हि विद्या खलु तस्य सर्वाधिकं श्रेष्ठं मित्रं भवति। अनेनैव कारणेन महाकविना भर्तृहरिणा कथितम्–

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नं गुप्तं धनं,
विद्या भोगकरी यश: सुखकरी विद्या गुरूणां गुरु:।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
विद्या राजसु पूजिता न हि धनं विद्याविहीन: पशु:॥

संसारेऽस्मिन् विद्या वस्तुत: अतीवाद्भुतं धनमस्ति, कुत: अन्यानि धनानि व्यये कृते विनष्टानि भवन्ति, किन्तु विद्या नामकं धनमेतत् तु व्यये कृतेऽपि निरन्तरं वर्धते, सञ्चयात् खलु विनष्टं भवति।उक्तञ्च–

अपूर्व: कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति, क्षयमायाति सञ्चयात्॥

विद्या नामकस्य धनस्यास्यैका अन्यापि विशेषता, कोऽपि चौर: एनं धनं चोरयितुं न शक्य:, नैव धनमेतत् राजाऽपि बलपूर्वकं ग्रहीतुं शक्यते, एवमेव धनमेतत् भ्रातृभि: नैव विभज्यते, भारोऽपि खलु नैव भवति धनेऽस्मिन्, अनेनैव धनमेतत् अन्येषु धनेषु मुख्यतां भजते। उक्तञ्च–

न चौर्यहार्यं न च राज्यहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्ययेकृते वर्धत एव नित्यं,
विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम्॥

नाम- उत्कर्ष
कक्षा-6 ब
विषय- विद्या

प्रयत्नो विधेय

प्रयत्नेन कार्य सिद्धिर्जनानाम्
प्रयत्नेन युद्ध मय: स्याज्जनानाम,
प्रयत्तेन सदबुद्धवाद्धमनाताम् ।
प्रयली विधय: प्रयत्नी विधेय: ।।
प्रयत्नेन धीरा: समुद्रं तरान्ट,
प्रयत्न वीशारीरीन लङ्गया?
प्रयत्न विधावियत्युप्तान्त,
प्रमत्तों पूर्वधेय: प्रयत्नो विधेय: ।।
कठोर: प्रमत्तान्मृदुत्वं प्रयाति,
प्रयत्नादसाध्य भवत्येव साध्यम् ।
प्रयत्नापयोदया सुयोग्धा भवान्डू
प्रयत्नो विधय प्रयत्नी विधेय:
प्रयत्नेन मुक्तिंत्रता : भारतीया: ।
प्रयत्नेन ताई नाता : आरतीया:।
प्रयत्नेन विश्वाप्रया : भारतीमा ।
प्रयत्ती विधेय: प्रयत्नो विधेय
।

अरमान रज़ा
कक्षा -8 (स)

जलम् एव जीवनम्

नाम-कोमल
कक्षा-8 ब
विषय-
जलम् एव
जीवनम्

जलम् एव जीवनम् इति उक्त्यनुसारम् अस्माकं जीवने जलस्य आवश्यकता वर्तते । जीवनाय जलम् आवश्यकं वर्तते । तृष्णायां सत्यां जलेन एव निवारणं भवति । पृथिव्याः जीवानां कृते आवश्यकं तत्त्वम् अस्ति जलम् । अस्माकं सौभाग्यम् अस्ति यत् पृथिवी जलीयः ग्रहः वर्तते । जलं सौरमण्डले दुर्लभं वर्तते । अन्यत्र कुत्रापि जलं नास्ति । पृथिव्यां जलं पर्याप्तम् अस्ति । अतः पृथिवी नीलग्रहः इति उच्यते । जलं निरन्तरं स्वरूपं परिवर्तते । सूर्यस्य तापेन वाष्पस्वरूपं, शीतले सति सङ्घनीकरणे मेघस्वरूपं, वर्षामाध्यमेन जलस्वरूपं धरति । जलं महासागरेषु, वायुमण्डले, पृथिव्यां च परिभ्रमति । जलस्य तत्परिभ्रमणं जलचक्रं कथ्यते । अस्माकं पृथिवी स्थलशाला इव अस्ति । अलवणस्य जलस्य मुख्यं स्रोतः नदी, तडागः, हिमनदी च वर्तते । महासागराणां, समुद्राणां च जलं लावण्यं वर्तते । तस्मिन् जले सोडियम् क्लोराइड्, पाचकलवणं च प्राप्यते ।

आतंकवाद

आतंकवादः विश्वस्य गुरूतमा समस्या वर्त्तते। संसारस्य प्रत्येकं देशः

अनेन येन–केन प्रकारेण पीडीतः अस्ति। आतंकवादः स्वविनाश लीलया विश्वं ग्रसितु तत्परोऽस्ति। अनेन विश्वस्य अनेकानि क्षेत्राणि रक्त लिप्तानि

जातानि। अनेन अनेके निर्दोषः जनाः प्राणान् अत्यजन्, महिलाः विधवाः जाताः, बालाश्च अनाथाः अभवन्। आतंकवादे ते एव जनाः सम्मिलिता भवन्ति ये स्व स्वार्थ–पूर्ति कर्त्तुम् इच्छिन्ति संसारे च अशान्तेः वातावरणं

स्थापयितु कामयन्ते। शान्तीच्छुकैः देशैः आतंकवादस्य विनाशाय मिलित्वा

प्रयत्नं कर्त्तव्यम् अन्यथा एषा समस्या सुरसामुखमिव अनुदिनं

नाम-अपूर्वा
कक्षा-7 स
विषय-
आतंकवाद

लुब्ध:श्रृगाल:(कथा)

कश्चन व्याधः आसीत् । सः एकदा मृगयार्थं वनं गतवान् । बहुकालानन्तरं सः एकं वराहं दृष्टवान् । तं लक्ष्यीकृत्य सः बाणप्रयोगं कृतवान् । वराहस्य शरीरे महान् व्रणः जातः । व्रणितः वराहः कोपेन व्याधस्य उपरि आक्रमणं कृतवान् । स्वीयाभिः तीक्ष्णाभिः दंष्ट्राभिः तस्य शरीरं विदीर्णवान् । तेन व्याधः मृतः । बाणप्रहारवेदनया वराहः अपि मृतः ।

तस्मिन् एव वने कश्चन शृगालः आसीत् । सः अतीव लुब्धः । सः शृगालः आहारान्वेषणं कुर्वन् तत्र एव आगतवान् । व्याधस्य वराहस्य च मृतं शरीरं सः दृष्टवान् । तत् दृष्ट्वा सः चिन्तितवान् – 'अद्य मम दैवम् अनुकूलम् अस्ति । यथेष्टम् आहारः विनायासं लब्धः । एषः आहारः बहुदिनानां कृते पर्याप्तः भविष्यति । अतः प्रतिदिनम् अपि किञ्चिदेव खादामि' इति ।

अनन्तरं सः व्याधस्य शरीरं परिशीलितवान् । तस्य शरीरस्य पार्श्वे चापः पतितः आसीत् । चापे चर्मनिर्मिता रज्जुः बद्धा आसीत् । तत् दृष्ट्वा शृगालः 'अद्य एतां चर्मणः रज्जुं खादामि । अन्यत् सर्वं पश्चात् खादामि' इति चिन्तितवान् । चापस्य एकां कोटिं मुखे स्थापयित्वा सः दन्तैः रज्जुं जग्धवान् । परन्तु यदा रज्जुः भग्ना तदा चापस्य कोटिः शृगालस्य मस्तकं विदीर्य बहिः आगता । शृगालः तया वेदनया तत्क्षणे एव मृतः अभवत् ।

नाम- कनक
कक्षा-7 ब
विषय- लुब्ध: श्रृगाल:

नीतिश्लोक:

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

अर्थ : सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी को शुभ दर्शन हो और कोई दु:ख से ग्रसित न हो.

नाम- लक्ष्य
कक्षा-8 अ
विषय-नीतिश्लोक:

2.

अष्टादस पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम् ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

अर्थ : अट्ठारह पुराणों में व्यास के दो ही वचन हैं : 1. परोपकार ही पुण्य है. और 2. दूसरों को दु:ख देना पाप है.

3.

गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अर्थ : गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है; गुरु ही साक्षात् परम् ब्रह्म है; उन सद्गुरु को प्रणाम.

धरा गुर्जरी

जय जय जय हे धरा गुर्जरी
गौरवशाली हे मात गुर्जरी ।

पूर्वदिशायां रक्षति कालिका
वसति कृष्ण पश्चिमादिशायम् ।

उत्तरदिशायां रक्षति अम्बा
कुन्तेश्वरस्य तु दक्षिणधाम ।

धन्य हे देवरक्षिता गूर्जरी
जय जय जय हे धरा गुर्जरी ।

पुव्यसलिला नर्मदामाता
सूर्यतनया वहिता विपुला ।

साभमत्या: इतिहास विशाल
गुर्जर देवव्रत महाप्रभाव: ॥

धन्य हे धर्मदायिनी गुर्जरी
जय जय जय हे धरा गुर्जरी
जय जय जय हे धरा गुर्जरी
गौरवशाली हे मात गुर्जरी

आराध्या पाल
7 अ

नाम:—आकाश कुमार
क्लास:— ऐट C
टॉपिक:—पुरः पुरःप्रगच्छ रे(कविता)

पुरः पुरः प्रगच्छ रे _
प्रगाय मातृवन्दनम्।
स्व-जन्म-भूमि रक्षणे

प्रयच्छ वीर! जीवनम्।।
शिरः कुरु समुन्नतम्

तवास्तु मा क्वचिद् भयम्।
पुरः पुरः प्रगच्छ रे

प्रगाय मातृवन्दनम्।।
रणे धृतिः सुकौशलम्

प्रवर्धताम् मनोवलम्।
सुनिश्चितः जयस्तव

कुरु स्वधर्मपालनम्।।
पुरः पुरः प्रगच्छ रे

प्रगाय मातृवन्टनम्//

दूरदर्शनस्य लाभा: नष्टा: च

अस्माकं जीवने दूरदर्शनस्य स्थानं अतिमहत्तरं भवति। सर्वेषु ग्रहेषु दुरदर्शनं अवश्यं भवति। यथा अन्न ओदकं च तथा जीवने अनिवार्य घटकं दुरदर्शनं। जन्मध्ये सार्वत्रिकं नातं किम वा संजातमिति तस्मिन एव निमीषे जनेषु दर्शनसाध्यं करोति दुरदर्शनं। एका सुह्रदिव अस्माकं समीपे स्थित्वा सर्वानिकयीणी कथयति दुरदर्शनं।

दूरदर्शनस्य गुणा: दोषा: च सन्ति। दुरदर्शनं वार्ताभि: बालान वृध्दान च विज्ञापयति। अमेरिकादेशे संजातं कार्यमपि तस्मिन् क्षण एव अस्माकं भारतदेशे वर्तमानकाले द्रष्टुम शक्यते।

आधुनिककाले यत्रकुत्रापि संजाता वार्ता गणेनैव भुवने दूरदर्शन द्वारा प्रसारयति। पुरातनकाले एवं नासीत। दूरदर्शनस्य 'रियलिटी षो' द्वारा कलाकराणां कलाकारिगां च सर्वप्रतिआं वर्धयितुं शक्यते। दूरदर्शन द्वारा गीतानि श्रान्तुम शक्यते। चलचित्रं द्रष्टुम् शक्यते। महात्मानाम् जीवचारित्रं तेषां महत्वम् च द्रष्टुम् शक्यते।

नाम-पंखुड़ी श्रीवास्तव

कक्षा-षष्टम 'अ'

गुनी बाजपेई
सातवीं स
रोल नं 13
विषय -
स्वप्न ,दृश्यम
,तालकम्

स्वप्न :
पुरातनाभ्यासो मे यं यतो
नवनवस्वप्नान् पश्यामि
प्रत्येक : स्वपनो यो साकारीभवति
असौ कस्याश्चिन्नतीनकवितायाः : रूपं धत्ते ।।

दृश्यम्
दर्शय मां तदेव दृश्यम्
यस्मिन् काचिज्जननी
स्वापत्यं मृदुमृदुप्रहारै :
तन्मयतया गायन्ती च
किंचिल्लोकगीतम्
दोलयन्ती वालदोलिकाम् ।।

तालकम्
नैव शक्नोसि तालकेन
बन्ध्दुं में वाक्शत्तिकम्
कुत्र तत् तालकं वा
यस्य कुज्जिका मम हसरतें ना स्ति ?

नाम-मुदित त्रिवेदी
कक्षा-8 'ब'
विषय-माँ

माँ, माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार,
न त्वया सदृश्य कस्याः स्नेहम्,
करुणा-ममतायाः त्वम् मूर्ति,
न कोअपि कर्त्तुम् शक्नोति तव क्षतिपूर्ति।
तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति,
'माँ'शब्दस्य महिमा अपार,
न माँ सदृश्य कस्याः प्यार,
माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार।

एहि एहि वीर रे

एहि एहि वीर रे
एहि एहि वीर रे
वीरतां विधेहि रे
पदं हदं निधेहि रे
भारतस्य रक्षणाय
जीवनं प्रदेहि रे।।

त्वं हि मार्गदर्शकः
त्वं हि देशरक्षकः
त्वं हि शत्रुनाशकः
कालनाग तक्षकः।।

साहसी सदा भवेः
वीरतां सदा भजेः
भारतीय-संस्कृतिं
मानसे सदा धरेः।।

पदं पदं मिलच्चलेत्
सोत्साहं मनो भवेत्
भारतस्य गौरवाय
सर्वदा जयो भवेत।।

शान्तनु
कक्षा 8 'स'

बक: कर्कतक: च (कथा)

हिमलयस्य समीपे एक: सरोवरे: आसीत् । तस्य सरोवरस्य समीपे एक: बक: अवसत् । कालान्तरे सः बकः वृद्धः अभवत । अतः सः मत्स्याना गृहण कर्तुम असमर्थः अभवत ।
अनन्तर बकः स्वस्य जीवनस्य रक्षणाय एकस्य उपयक्त् चिन्तनम् अकरोत् । उपायानुसारं बक: सरोवरस्य समीपे उपविश्य रोदनम् अकरोत् तदा एक: कर्कटक: बकम् अपश्यत् ।
सः वकस्य निकटे अपृच्छत । भो बक ! भवान् किमर्थं रोदनं करोति ? इति । बकः तस्य प्रश्नस्य ,उत्तरम् अयच्छत , कर्कटक! आस्मिन् वत्सरे वृष्टि : न भाविष्यति । अतः जलस्य न्यूनतथां व्यं पीडिता: भाविस्यामः ।
अतः एव अहं रोदनम् करोमि इति। कर्कटक: अपि दुःखित: इदानीं किं कुर्म इति बकस्य निकटे अपायम् अपृच्छत् ।
बक: अवदत् मम जलपूर्णस्य अन्यस्य सरोवरस्य परिचट अस्ति। तत्र वयं गन्वा जीवाम: इति। कर्कटकः तर्हि भवानेव मम, बन्धु जनानां च रक्षणं करोतु इति अवदता वश्चक: बक: एकस्मिन् दिने एकं कर्कटकं नीत्वा अखादयत् ।

आयुष कुमार सिंह
कक्षा 8 'अ'

प्रेरणादायक संस्कृत श्लोक अर्थ सहित।

१- वाणी रसवती यस्य,यस्य श्रमवती क्रिया।
लक्ष्मी : दानवती यस्य,सफलं तस्य जीवितं।।

अर्थ — जिस मनुष्य की वाणी मीठी हो, जिसका काम परिश्रम से भरा हो,जिसका धन दान करने मे प्रयुक्त हो,उसका जीवन सफ़ल है।

२- आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु:।
नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कृत्वा यं नावसीदति।।

अर्थ — व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन आलस्य होता है। व्यक्ति का परिश्रम ही उसका सच्चा मित्र होता है। क्योंकि जब भी मनुष्य परिश्रम करता है तो वह दुखी नहीं होता है और हमेशा खुश ही रहता है।

नाम - प्रदीप कुमार सिंह
कक्षा - ८ वी (वर्ग - ई)
अनुक्रमांक - ३३
द्वितिया पाली।

कला अनुभाग

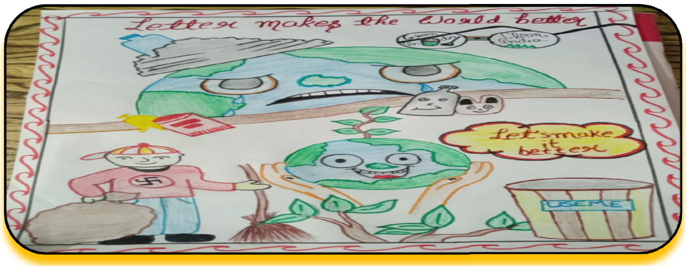
Letter makes the World better
Let's make it better
USE ME

CLEAN IndIA
SCHOOL

READING DAY

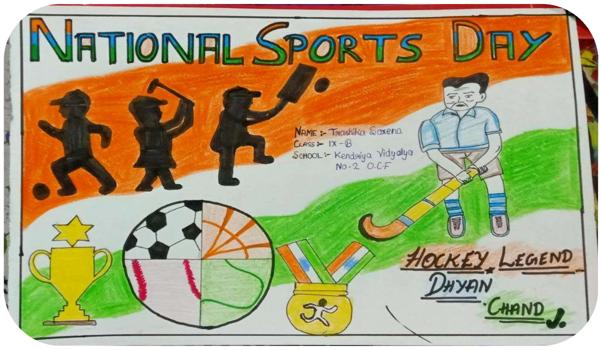
NATIONAL SPORTS DAY
HOCKEY LEGEND
DHYAN CHAND

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है।
क ख ग घ ङ

INDIA
SPORT'S DAY
MADE BY UJJWAL

CLEAN INDIA, GREEN INDIA
LET'S MAKE IT BETTER

आओ एक कदम बढ़ाएं
भारत को स्वच्छ बनाएं

DUST BIN
स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत
SANDHYA RAJPOOT

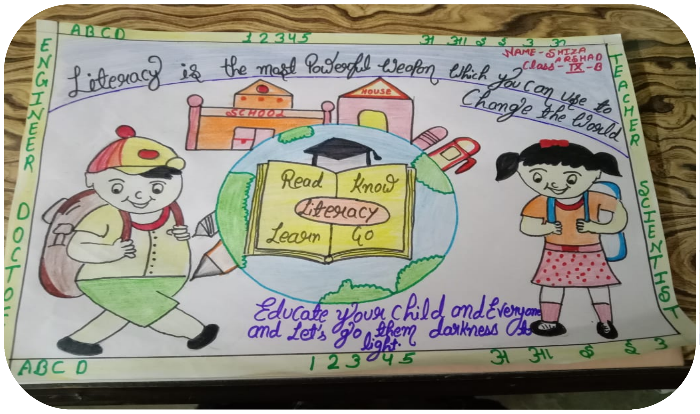
Literacy is the most Powerful Weapon which you can use to Change the World
SCHOOL
HOUSE
Read Know
Literacy
Learn Go
ENGINEER
DOCTOR
TEACHER
SCIENTIST

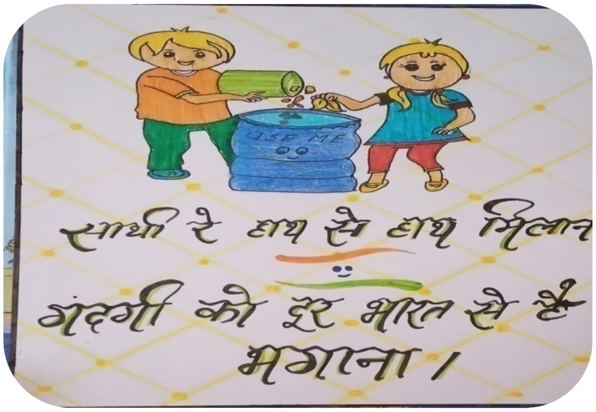
USE ME
साथी रे हाथ से हाथ मिलाना
गंदगी को दूर भारत से है भगाना।

SOAP
OPEN SEWAGE
URINATING IN PUBLIC
SPITTING
USE ME